हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -01 ♦ अंक-11 ♦देहरादून - रविवार 05 जनवरी 2025 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/-

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सिद्धपीठ माँ सुरकण्डा मन्दिर, पूजा अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली और समृद्धि की कामना की

देहरादून(आरएनएस)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुवार को प्रसिद्ध सिद्धपीठ सुरकंडा देवी मंदिर पहुंचे। मुख्यमंत्री ने मां सुरकंडा देवी के दर्शन कर विधिवत पूजा अर्चना कर देश प्रदेश की सुख समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की तथा मंदिर की परिक्रमा भी की। मुख्यमंत्री ने श्रद्धालुओं के साथ बातचीत कर उनसे यात्रा के संबंध में जानकारी ली। श्रद्धालु अपने बीच मुख्यमंत्री को देखकर काफी खुश नजर आए तथा उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ सेल्फी भी ली। मुख्यमंत्री ने स्थानीय दुकानदारों से वार्ता कर उनका हाल चाल जाना। मुख्यमंत्री ने स्थानीय स्वयं सहायता महिला समूहों की महिलाओं द्वारा उत्पादित स्थानीय सामग्री की खरीददारी भी की।

मुख्यमंत्री ने सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उत्तराखण्ड में शीतकालीन यात्रा प्रारंभ की गई है। जिसमें श्रद्धालु काफी संख्या में आ रहे हैं। उत्तराखण्ड देवभूमि है। राज्य के हर मन्दिर का अपना अलग महत्व है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी प्रमुख मंदिरों को शीतकालीन यात्रा हेतु तैयार किया जा रहा है और अधिकांश स्थलों पर तैयारियां पूर्ण कर ली गई है, जिनका असर आज इस श्रद्धालुओं की संख्या को देखकर लगाया जा सकता है।

इस दौरान एसएसपी आयुष अग्रवाल, एडीएम ए.के. पाण्डेय, एएसपी जे. आर. जोशी सहित अन्य गणमान्य एवं श्रद्धालु मौजूद रहे।

हुकुम सिंह सातवीं बार बने देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष

हल्द्वानी(आरएनएस)। हुकुम सिंह कुंवर देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल के सातवीं बार प्रदेश अध्यक्ष चुने गए हैं। गुरुवार को संगठन के स्थापना दिवस पर आयोजित अधिवेशन में ध्वनिमत से उनका निर्विरोध चुनाव किया गया। बिठौरिया के निजी बारातघर में आयोजित अधिवेशन में संगठन की पिछले पांच साल की गतिविधियों का ब्योरा रखा गया। इसके बाद संगठन के संस्थापक अध्यक्ष ने अपना कार्यकाल पूरा होने पर इस्तीफा सौंपा। इसके बाद नए अध्यक्ष के लिए सदस्यों से नाम आमंत्रित किए गए। प्रदेश महामंत्री राजकुमार केसरवानी ने हुकुम सिंह कुंवर के ही नाम का प्रस्ताव रखा। इसका अनुमोदन प्रदेश उपाध्यक्ष गोपाल भट्ट ने किया। अधिवेशन में मौजूद सदस्यों ने कुंवर को सातवीं बार ध्वनिमत से अध्यक्ष चुना। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि राज्य आंदोलन के साथ ही व्यापारियों के हितों के लिए अपने गठन के बाद से संगठन लगातार काम कर रहा है। अब संगठन ज्यादा मजबूती से अपना संघर्ष जारी रखेगा। अधिवेशन में प्रदेश अनुशासन समिति के अध्यक्ष डॉ. बालम सिंह बिष्ट, प्रदेश मंत्री रमेश जोशी, प्रदेश सचिव पूरन सिंह, खड़क सिंह बगडवाल, हिमांशु मेर, हल्द्वानी अध्यक्ष अजय कृष्ण गोयल, चोरगलिया अध्यक्ष दीपक थुवाल, हल्दूचौड़ अध्यक्ष खीम सिंह बिष्ट, पंकज कुमार, हर्ष जलाल, पंकज सुयाल, घनश्याम सिंह बिष्ट, भास्कर सुयाल, उत्तम पंवार, मनीष, शंभू दत्त कविदयाल, शंकर सिंह रावत, दीपक खुल्वे, श्याम सिंह नेगी, संदीप पाठक, राजेश अधिकारी, हरमोहन बिष्ट, जेड वारसी, आफताब हुसैन, अमित बुध लाकोटी, सूरज सामंत, कृष्ण कुमार आगरी, राकेश अग्रवाल, बृजमोहन सिजवाली, बलवंत रावत, सुरेश तिवारी, पीपी सिंह, गुरुदयाल सिंह, माधो सिंह देउपा, राहुल नेगी, दीपक जोशी, मनोज बिनवाल, विनय चौहान, अविनाश गुप्ता, जगत सिंह बोरा, सुरेश अग्रवाल, जीवन पांडे, वीरेंद्र सिंह रौतेला, भुवन दानी, उमेश बेलवाल, प्रकाश सिंह, मयंक जोशी, पीएस जीना, दान सिंह बिष्ट मौजूद रहे।

चाइनीज मांझे पर रोक लगाए जिला प्रशासन

हरिद्वार(आरएनएस)। महानगर व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष सुनील सेठी ने जिलाधिकारी से इंसानों से लेकर बेजुबानों तक के लिए जानलेवा बनते जा रहे चाइनीज मांझा बंद करने की मांग की । सेठी ने कहा कि हर वर्ष जानलेवा प्रतिबंधित चाइनीज मांझा इंसानों से लेकर पशु पक्षियों पर कहर बरसा रहा है। दोपहिया वाहन चालक चोटिल हो रहा है। प्रशाशन को अब सख्ती दिखाते हुए इस जानलेवा मांझे पर रोक लगानी चाहिए। बेजुबान मर रहे है लेकिन उसके बावजूद भी प्रतिबंध होने के बावजूद धड़ल्ले से चाइनीज मांझा उपयोग हो रहा है जो इंसानों के लिए अब घातक बन चुका है ।

हिमालयन हॉस्पिटल में ३१ तक उठाएं मुफ्त ओपीडी का लाभ

ऋषिकेश(आरएनएस)। हिमालयन अस्पताल जौलीग्रांट की ओर से सामान्य ओपीडी में आने वाले रोगियों को निशुल्क पंजीकरण और स्वास्थ्य परामर्श दिया जाएगा। 31 जनवरी तक अस्पताल में सामान्य ओपीडी सेवाओं को निशुल्क किया गया है। स्वामी राम हिमालयन विवि (एसआरएचयू) के अध्यक्ष डॉ. विजय धस्माना ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 31 जनवरी तक हिमालयन अस्पताल की सामान्य ओपीडी सेवाओं को निशुल्क रखा गया है। निशुल्क ओपीडी सुबह 8.30 बजे से प्रारंभ होगी और शाम 4 बजे तक चलेगी। डॉ. धस्माना ने कहा कि कई बार जानकारी के अभाव में लोग खुद ही घरेलू उपचार करने लग जाते हैं। प्रतिवर्ष 4 लाख से अधिक मरीज उपचार के लिए हिमालयन अस्पताल आते हैं। आंकड़े बताते हैं कि गुणवत्तापरक और अत्याधुनिक स्वास्थ्य तकनीकियों से सुसज्जित हिमालयन अस्पताल पर लाखों मरीजों का भरोसा है। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा अस्पताल की निशुल्क सेवा का लाभ उठाने की बात कही है।

अध्यक्ष डॉ. विजय धस्माना ने बताया कि अस्पताल आने वाले रोगियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। अधिक जानकारी के लिए फोन नम्बर 0135-2471202, 8194009605 पर संपर्क कर सकते हैं।

उपलब्ध निशुल्क सामान्य ओपीडी सेवा : अध्यक्ष डॉ. विजय धस्माना ने बताया कि जनरल मेडिसिन, सर्जरी, हड्डी, छाती एवं सांसव, त्वचा, स्त्री एवं प्रसूति, कान, नाक, गला (ईएनटी), नेत्र, बाल, मनोरोग की ओपीडी में आने वाले मरीजों का निशुल्क पंजीकरण करने के साथ स्वास्थ्य परामर्श दिया जायेगा।

मॉरीशस के उच्चायुक्त देव दिलियम पहुंचे परमार्थ निकेतन

ऋषिकेश(आरएनएस)। मॉरीशस के उच्चायुक्त देव दिलियम पत्नी और मित्रों के साथ परमार्थ गुरुवार को परमार्थ निकेतन आश्रम पहुंचे। यहां उन्होंने गंगा आरती, योग, ध्यान सहित सत्संग में सहभाग कर गंगा के प्रति श्रद्धा और आस्था समर्पित की। परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती और साध्वी भगवती सरस्वती से मॉरीशस के उच्चायुक्त देव दिलियम ने भेंटकर भारतीय संस्कृति और मॉरीशस के बीच के गहरे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को और भी प्रगाढ़ करते हुये विभिन्न सांस्कृतिक विषयों पर भी चर्चा की। स्वामी चिदानंद सरस्वती ने कहा कि भारत और मॉरीशस के बीच आध्यात्मिक संबंध प्राचीन समय से जुड़े हुए हैं। मॉरीशस में भारतीय संस्कृति और धर्म का गहरा प्रभाव है। मॉरीशस में गंगा पूजन, शिवरात्रि, होली और दीपावली जैसे पर्वों का उत्सव भी भारतीय संस्कृति की व्यापकता का उत्कृष्ट उदाहरण है। देव दिलियम की सपरिवार दो दिवसीय परमार्थ निकेतन यात्रा के अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभवों को साझा करते हुये कहा कि परमार्थ निकेतन एक शांतिपूर्ण दिव्य वातावरण से युक्त आध्यात्मिक शिक्षाओं और पर्यावरणीय संरक्षण के लिये प्रसिद्ध है। परमार्थ निकेतन में भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को बड़ी ही दिव्यता से सहेज कर रखा है। उन्होंने इस यात्रा को अपनी यादगार यात्रा बताया।

सम्पादकीय

देवभूमि में "मेडिको -टूरिज्म" की अपार संभावनाएं

पर्वतेषु मनोरम्येषु, सौंदर्यं दृष्ट्वा मोदते।
स्वस्थ्यं तत्र लभ्यते च, पर्यटनं सुखाय च
नदी: वनं च पर्वताश्च, आरोग्यं यच्छति मानव:।
तस्मात् प्रकृतिं सेवेत, जीवनं भवति उत्तमम्घ
अर्थात,

सुंदर पहाड़ों को देखकर मन प्रसन्न होता है। वहां स्वास्थ्य लाभ होता है, और पर्यटन आनंददायक होता है। नदी, वन और पर्वत मानव को स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। इसलिए, प्रकृति की सेवा करने से जीवन उत्तम बनता है।

देवभूमि उत्तराखण्ड के पर्वतों का सौंदर्य प्रकृति का अनुपम उपहार है। हरे-भरे पहाड़ न केवल शांति और सुकून प्रदान करते हैं, बल्कि मेडिको टूरिज्म और ईको टूरिज्म का सुख प्रदान करते हैं। यहां शुद्ध वायु, औषधीय वनस्पतियां, और प्राकृतिक जल स्रोत स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। यहां योग, ध्यान, और प्राकृतिक चिकित्सा जैसी गतिविधियां मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती हैं। साथ ही, ईको टूरिज्म पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समुदायों के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करता है। देवभूमि उत्तराखण्ड में हिमाच्छादित पर्वत शिखर, हरहराते गिरते झरने, हरे-भरे मनमोहक मखमली बुग्यालों का अनूठा सौंदर्य और स्वास्थ्य लाभ हेतु बेहद अनुकूल मौसम,पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है और जीवन को नई ऊर्जा और शांति प्रदान करता है। विद्यमान पर्यावरणीय परिस्थितियों के दृष्टिगत देवभूमि उत्तराखण्ड में मेडिको-टूरिज्म,ईको -टूरिज्म, स्प्रिचुअल- टूरिज्म की अपार संभावनाएं हैं। इनको अर्थोपाय के साधन बनाया जा सकता है।

देवभूमि उत्तराखण्ड के सर्वांगीण विकास हेतु हमारे प्रयास अहर्निश जारी रहेंगे।।

जय देवभूमि उत्तराखण्ड!!जय भारत !!

---डॉ.गार्गी मिश्रा

दिल्ली की सत्ता में लौटने की जुगत

अनिल चतुर्वेदी

तकरीबन ढाई दशक बाद दिल्ली की सत्ता में वापिसी के लिए भाजपा फिर एक प्रयोग करने की तैयारी में हैं। और यह प्रयोग होगा पढ़ी लिखी महिलाओं को राजनीति में बढ़ाने का। 26 साल पहले भी भाजपा ने विधानसभा चुनावों से दो महीने पहले सुषमा स्वाराज को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया था पर भाजपा तब इस खेल में फेल हो गई थी। अब जब दिल्ली में आप पार्टी के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इस्तीफा देने के बाद दिल्ली सरकार में ही मंत्री आतिशी को मुख्यमंत्री बनाया है तो भाजपा को फिर सुध आई है। तभी 2025 में होने जा रहे दिल्ली विधानसभा के चुनावों में फतेह की उम्मीद और मुख्यमंत्री को लेकर भाजपा पढ़ी लिखी महिलाओं का जो नरेटिव आप पार्टी ने आतिशी को मुख्यमंत्री बनाकर बनाया है उसी को भाजपा अपनाने की तैयारी में बताई जा रही है। हाँ यह अलग बात है कि भाजपा बांसुरी के साथ-साथ लोकसभा हारी और पूर्व केंद्रीय मंत्री रहीं स्मृति ईरानी को भी सीएम पद के लिए आगे बढ़ाने की कोशिश में बताई जा रही। भाजपा को लगता है कि चुनाव में ग्लैमर का तडका भी कहीं न कहीं उसे फायदा पहुँचा सकता है। दिल्ली की नई मुख्यमंत्री आतिशी दिल्ली में पूसा रोड स्थित स्प्रिंगडेल्स स्कूल से स्कूली शिक्षा लेने के बाद स्टीफन्स कालेज में पढीं और फिर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से शिक्षा लेने के बाद राजनीति में आईं। कुछ इसी तरह भाजपा की टिकट पर इस बार नई दिल्ली से सांसद बनी बांसुरी स्वराज भी रहीं हैं। बांसुरी स्वराज ने भी आक्सफोर्ड से कानून की पढ़ाई कर हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में वकालत की और फिर राजनीति में आईं है। और पहली बार में नई दिल्ली से लोकसभा जीत सांसद बनी है। अब भला कोई यह कहे कि युवा और विदेश से पढ़ाई के बाद महिला मुख्यमंत्री का आप का नरेटिव समझने के बाद भाजपा भी यह करती दिख रही है तो आश्चर्य भी कैसा ? या यूँ कहिए कि दोनों महिलाएँ,युवा ,विदेश में पढ़ी, उम्र भी करीब एक समान ही है और राजनीति में हाथ अजमा रही हैं। हाँ यह अलग बात है कि आतिशी का मकसद आगे अरविंद केजरीवाल को फिर मुख्यमंत्री बनाने में माहौल तैयार करने की भी जिघ्म्मेवारी बताई जा रही है। पर बांसुरी के साथ शायद ऐसा नहीं ।उनकी पार्टी भाजपा तो केवल इस नरेटिव को अजमाकर दिल्ली की सत्ता में लौटने की जुगत में है।और साथ ही वे पार्टी के लिए महिलाओं के बीच वोटों के लिए जमीन तैयार कर सकेंगी।

पर सवाल तो यह भी है कि जिन तीन पूर्व सांसदों को पार्टी विधानसभा चुनावों में उतारने की तैयारी में और उनसे आसपास की विधानसभाओं में वोटों पर असर पडने की उम्मीद है या यह कि वोटों की खघतिर तीनों सांसद पार्टी से सीएम पद की माँग उठाकर वोटों पर असर डाल सकेंगे आखरिघ उनके साथ पार्टी क्या खेला करना चाहती है? सोचिए दस साल सांसद रहने के बाद विधायक बन भी गए तो क्या कहेंगे लोगबाग और कैसा महसूस करते रहेंगे ये तीनों नेता। लेकिन पार्टी का आदेश सिरमौर, सो पूर्व सांसद रमेश विधूडी, प्रवेश वर्मा और मीनाक्षी लेखी के अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों में मैदान में उतारे जाने की संभावना है। चर्चा है कि पार्टी ने इन तीनों को इशारा कर दिया है। चर्चा तो यह भी है कि टिकट दिए जाने पहले इन तीनों पूर्व सांसदों की जीत हार की संभावनाओं को सर्वे करा कर टटोला जाएगा। हालाँकि पार्टी ने अपने सभी छह पूर्व सांसदों से विधानसभा चुनाव की तैयारी में लग जाने और समय समय पर पार्टी आलाकमान को रिपोर्ट देने को कहा है। पूर्व सांसदों की टिकट फिसड्डी होने के चलते कटी या फिर पार्टी की दिल्ली फतह की मंशा के चलते यह बात अलग है पर भाजपा को भरोसा है कि ये तीनों पूर्व सांसद विधानसभा चुनावों में अपने लोकसभा के तहत आने वाली पाँच विधानसभा क्षेत्रों में असर डाल सकेंगे। इसके साथ ही मौजूदा सांसदों को भी कहा गया है कि अपने संसदीय क्षेत्र में में भाजपा उम्मीदवारों को जिताने की नैतिक जिघ्म्मेदारी लें।

कठमुल्लों की तानाशाही से अमनपसंद आवाम परेशान

विनीत नारायण

तालिबान द्वारा यह नया प्रतिबंध महिलाओं को सार्वजनिक रूप से गाने, कविता पढने या जोर से पढने से भी रोकता है क्योंकि उनकी आवाज को शरीर का श्अंतरंग' हिस्सा माना जाता है। अगस्त के अंत में लागू किया जाने वाला यह तालिबानी आदेश स्वतंत्रता पर कई प्रहारों में से एक है। महिलाओं को अब श्प्रलोभन' से बचने के लिए अपने पूरे शरीर को हर समय ऐसे कपड़ों से ढकना चाहिए जो पतले, छोटे या तंग न हों, जिसमें उनके चेहरे को ढकना भी शामिल है। पिछले कुछ वर्षों से यूरोप की स्थानीय आबादी और बाहर से वहाँ आकर बसे मुसलमानों के बीच नस्लीय संघर्ष तेज हो गए हैं। ये संघर्ष अब खूनी और विध्वंसकारी भी होने लगे हैं। कई देश अब मुसलमानों पर सखघ्त पाबन्दियाँ लगा रहे हैं। उन्हें देश से निकालने की माँग उठ रही है। आतंकवादियों की शरणस्थली बनी उनकी मस्जिदें बुलडोजर से ढहायी जा रही हैं। उनके दाढ़ी रखने और बुर्का पहनने पर पाबन्दियाँ लगाई जा रही हैं।

ये इसलिए हो रहा है क्योंकि मुसलमान जहां जाकर बसते हैं वहाँ शरीयत का अपना कघनून चलाना चाहते हैं। वो भी ज्यों का त्यों नहीं। वे वहाँ स्थानीय संस्कृति व धर्म का विरोध करते हैं। अपनी अलग पहचान बना कर रहते हैं। स्थानीय संस्कृति में घुलते मिलते नहीं है। हालाँकि सब मुसलमान एक जैसे नहीं होते। पर जो अतिवादी होते हैं उनका प्रभाव अधिकतर मुसलमानों पर पड़ता है। जिससे हर मुसलमान के प्रति नफरत पैदा होने लगती है।

ये बात दूसरी है कि इंग्लैंड, फ्रांस, हॉलैंड, पुर्तगाल जैसे जिन देशों में मुसलमानों के खघ्लिाफ माहौल बना है। ये वो देश हैं जिन्होंने पिछली सदी तक अधिकतर दुनिया को गुलाम बनाकर रखा और उन पर अपनी संस्कृति और धर्म थोपा था। पर आज अपने किए वो घोर पाप उन्हें याद नहीं रहे। पर इसका मतलब ये नहीं कि अब मुसलमान भी वही करें जो उनके पूर्वजों के साथ अंग्रेजों, पुर्तगालियों, फ्रांसीसियों, डच ने किया था। क्योंकि आज के संदर्भ में मुसलमानों का आचरण अनेक देशों में वाकघ्ई चिंता का कारण बन चुका है। उनकी आक्रमकता और पुरातन धर्मांध सोच आधुनिक जीवन के बिलकुल विपरीत है। इसलिए समस्या और भी जटिल होती जा रही है।

ऐसा नहीं है कि उनके ऐसे कट्टरपंथी आचरण का विरोध उनके विरुद्ध खड़े देशों में ही हो रहा है। खघ्द मुस्लिम देशों में भी उनके कठमुल्लों की तानाशाही से अमनपसंद आवाम परेशान है। अफगघनिस्तान की महिलाओं को लें। उन पर लगीं कठोर पाबंदियों ने इन महिलाओं को मानसिक रूप से कुंठित कर दिया है। वे लगातार मनोरोगों का शिकार हो रही हैं। जब तालिबान ने पिछले महीने सार्वजनिक रूप से महिलाओं की आवाज पर अनिवार्य रूप से प्रतिबंध लगाने वाला एक कानून पेश किया, तो दुनिया हैरान रह गई। लेकिन जो लोग अफगानिस्तान के शासन के अधीन रहते हैं, उन्हें इस घोषणा से कोई आश्चर्य नहीं हुआ। एक अंतरराष्ट्रीय न्यूज एजेंसी से बात करते हुए वहाँ रहने वाले एक महिला बताया कि, ष्हर दिन हम एक नए कानून की उम्मीद करते हैं। दुर्भाग्यवश, हर दिन हम महिलाओं के लिए एक नई, पाबंदी की उम्मीद करते हैं। हर दिन हम उम्मीद खो रहे हैं।ष

इस महिला के लिए इस तरह की कार्रवाई अपरिहार्य थी। लेकिन उसके लिए व उसके जैसी अनेक महिलाओं के लिए ऐसे फैसलों के लिए मानसिक रूप से तैयार होने से उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पडने वाला हानिकारक प्रभाव कम नहीं हुआ। तालिबान द्वारा यह नया प्रतिबंध महिलाओं को सार्वजनिक रूप से गाने, कविता पढने या जोर से पढने से भी रोकता है क्योंकि उनकी आवाज को शरीर का श्अंतरंग' हिस्सा माना जाता है। अगस्त के अंत में लागू किया जाने वाला यह तालिबानी आदेश स्वतंत्रता पर कई प्रहारों में से एक है।

महिलाओं को अब श्प्रलोभन' से बचने के लिए अपने पूरे शरीर को हर समय ऐसे कपड़ों से ढकना चाहिए जो पतले, छोटे या तंग न हों, जिसमें उनके चेहरे को ढकना भी शामिल है। जीवित प्राणियों की तस्वीरें प्रकाशित करना और कंप्यूटर या फोन पर उनकी तस्वीरें या वीडियो देखना भी प्रतिबंधित कर दिया गया है, जिससे अफगानिस्तान के मीडिया आउटलेट्स का भाग्य गंभीर खतरे में पड़ गया है। महिलाओं की आवाज रिकॉर्ड करना और फिर उन्हें निजी घरों के बाहर प्रसारित करना भी प्रतिबंधित है। इसका मतलब है कि जिन महिलाओं ने अपने इंटरव्यू रिकॉर्ड किए या वॉयस नोट्स के माध्यम से किसी न्यूज एजेंसी के साथ बात करना चुना, तो ऐसा उन्होंने काफी बड़ा जोखिम उठा कर किया। लेकिन कड़ी सजा की संभावना के बावजूद उन्होंने कहा कि वे चुप रहने को तैयार नहीं हैं। इस एजेंसी को दिए गए इंटरव्यू के माध्यम से वे चाहते हैं कि दुनिया अफगानिस्तान में महिला के रूप में जीवन की क्रूर, अंधकारमय सच्चाई को जाने।

इस इंटरव्यू में अधिकतर महिलाओं ने अमानवीय सजा के डर से अपना नाम न देने की इच्छा जाहिर की। परंतु काबुल की सोदाबा नूरई एक अनोखी महिला थीं ख्र उन्होंने सजा से बिना डरे अपना नाम लेने की इच्छा की। न्यूज एजेंसी को भेजे एक वॉइस मेसेज में उन्होंने कहा, ष्महिलाओं के लिए सार्वजनिक रूप से बोलने पर प्रतिबंध के बावजूद मैंने आपसे बात करने का फैसला किया क्योंकि मेरा मानना है कि हमारी कहानियों को साझा करना और हमारे संघर्षों के बारे में जागरूकता बढ़ाना जरूरी है।

खुद पहचान जाहिर करना एक बहुत बड़ा जोखिम है, लेकिन मैं इसे लेने को तैयार हूं क्योंकि चुप्पी केवल हमारी पीड़ा को जारी रखने की अनुमति ही देगी। यह नया कानून बेहद चिंताजनक है और इसने महिलाओं के लिए भय और उत्पीडन का माहौल पैदा कर दिया है। यह हमारी स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करता है और यह शिक्षा, कार्य और बुनियादी स्वायत्तता के हमारे अधिकारों को कमजोर करता है। उल्लेखनीय है कि सोदाबा नूरई को अपनी नौकरी से अगस्त 2021 में हाथ धोना पड़ा। क्योंकि तब वहाँ तालिबान का राज पुन: स्थापित हुआ और शरीयत कघनून के मुताबिकघ महिलाओं पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिये गये।

जब घर से ही शुरू हो प्रोफेशनल लाइफ

नौकरी छोड़कर घर से ही काम शुरू करने का निर्णय लेना आसान काम नहीं है। आपमें से कई ऐसा करना चाहती होंगी और कई कर भी चुकी होंगी। पर इस कठिन निर्णय को अपनाने से पहले आपको कई बातों का ध्यान रखना होगा।

मैं हमेशा से चाहती थी, मेरी एक ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट हो। सारा काम लैपटॉप और फोन के सहारे बढ़े, न ही कोई खास जगह की जरूरत और न ही किसी के लिए नौकरी करने की। मेरा करियर तो बस मेरे हाथ में होगा।'

३० साल की श्वेता ने दो महीने पहले अपनी वेबसाइट लॉन्च के मौके पर दोस्तों से वही सब कहा जो वह सालों से चाहती थी। पर अपना यह सपना पूरा करने के लिए उसने अपने पहले सपने को पीछे छोड़ दिया। सपना नौकरी करने का, जी हां, घर से अपना काम शुरू करने के लिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी। पर श्वेता मानती हैं नौकरी छोड़ घर से कोई भी काम करने से पहले बहुत सी चीजों के लिए खुद को तैयार कर लेना चाहिए। क्योंकि नौकरी छोड़ते ही जिंदगी में अचानक से बहुत कुछ बदल जाता है। सबसे पहली चीज तो लाइफस्टाइल ही होती है। और क्या-क्या रखें याद, आइए जानते हैं-

खुद से पूछें कुछ सवाल

नौकरी छोड़ कर घर से काम शुरू करने का निर्णय छोटा नहीं है। याद रखना होगा आप अपने निर्णय में सफल नहीं हुईं तो दोबारा सफलता की सीढियां आपके रास्ते में यों ही नहीं आ जाएंगी। तो रास्ता बदलने से पहले खुद से कुछ सवाल जरूर पूछें, जैसे

क्या ऑफिस के माहौल को छोड़ अकेले घर पर बैठकर खुद के लिए काम करने के लिए आप तैयार हैं?

क्या जो काम आप घर से शुरू करने जा रही हैं, उसे करने के निर्णय पर आप लंबे समय तक टिकी रह पाएंगी?

काम से जुड़ी सारी जानकारी आपके पास है या पहले ट्रेनिंग लेना सही रहेगा?

आपके मनपसंद काम को आपके आसपास वालों द्वारा सराहे जाने की संभावना कितनी है?

घर से काम करने पर भी परिवार आपके प्रोफेशन को नौकरी जितनी ही महत्ता देगा या नहीं?

करना क्या है?

क्या करना है और कैसे करना है? इस सवाल का जवाब आपके पास होना चाहिए। इस पूरी प्रक्रिया की एक साफ तसवीर आपके दिमाग में होगी, तो आपका मन इस पर आसानी से फोकस भी कर पाएगा।

दिक्कतों से होगा सामना

घर से काम करने में भी आपको चुनौतियों का सामना करना होगा, इसलिए इनसे निपटने का फुलप्रूफ प्लान आपके पास होना चाहिए। यह बहुत साफ सी बात है कि दिक्कतें तो हर काम में आती ही हैं, पर इनसे बखूबी निपटने वाले ही सफल होते हैं। अगर आपने अपने काम पर पूरी रिसर्च की होगी ,तो आपको दिक्कतों का अंदाजा तो होगा ही। मतलब किस स्थिति में कैसी दिक्कत आ सकती है, यह आप जानती होंगी। अगर नहीं, तो इसकी जानकारी जरूर लें और इनसे निपटने के विकल्पों पर भी पहले से गौर कर लें।

आर्थिक रूप से सक्षम हैं ना?

आप सालों से कमा रही हैं। हर महीने कमाई का बड़ा हिस्सा भविष्य के लिए जमा कर रही थीं। पर क्या यह इतना है कि आगे का एक बड़ा समय ठीक से, आसानी से बिना किसी आर्थिक किल्लत के कट जाए? सवाल के जवाब में अगर आप हां कहती हैं, तो ठीक है। पर जवाब न है, तो नौकरी छोड़कर घर से काम करने के फैसले पर जरा दोबारा विचार कर लीजिए। यह जरूरी नहीं है कि नए काम में कमाई तुरंत ही होने लगे।

शुरू में ही न करें बड़ा निवेश

भले ही आपने एक अच्छी राशि भविष्य के लिए रख ली है, पर याद रखें कि शुरुआत में ही एक बड़ी राशि अपने नए काम में निवेश न करें। यह एक बड़ा रिस्क हो सकता है। अगर परिणाम नकारात्मक हुआ तो आपको निराशा तो होगी ही, पैसा डूबेगा वो अलग।

जान-पहचान तो हैं ना?

आपने जिस भी काम को घर से करने के बारे में सोचा है उससे जुड़े लोगों से आपकी जान-पहचान तो है ना? मतलब काम शुरू करने के पहले आपको पूरी तरह से तैयारी करनी होगी। नौकरी छोड़ने के बाद अगर जीरो लेवल से काम शुरू करेंगी तो आपको ज्यादा चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

धैर्य से दोस्ती कर लीजिए

खुद को इतना बड़ा ब्रेक देने से पहले आपको धैर्यवान बन जाना होगा। हालांकि अच्छे की आशा करनी चाहिए, पर बुरे समय या अच्छे समय के इंतजार के लिए तैयार रहना ही समझदारी है। कुछ ही दिनों में आपके धैर्य की परीक्षा भी होगी, पर सफल होना है, तो इस धैर्य का दामन आपको थामकर रखना होगा।

अगर असफल रहीं तो

अगर एक नया काम शुरू कर रही हैं तो सफलता और असफलता दोनों की ही संभावना बराबर की है। इसलिए अगर असफल रहीं तो क्या करेंगी, यह जरूर सोच लें। प्लान बी आपके पास पहले से तैयार रहेगा तो आप आनेवाली चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाएंगी।

लाजवाब केक! चॉकलेट बादाम कपकेक

क्रिसमस यानी केक खाने का एक और मौका। इस साल क्रिसमस पर क्यों न घर में ही केक बनाया जाए, ताकि बच्चों का उत्साह भी दोगुना हो और उन्हें आपके हाथों से बने केक का स्वाद चखने का मौका भी मिले।

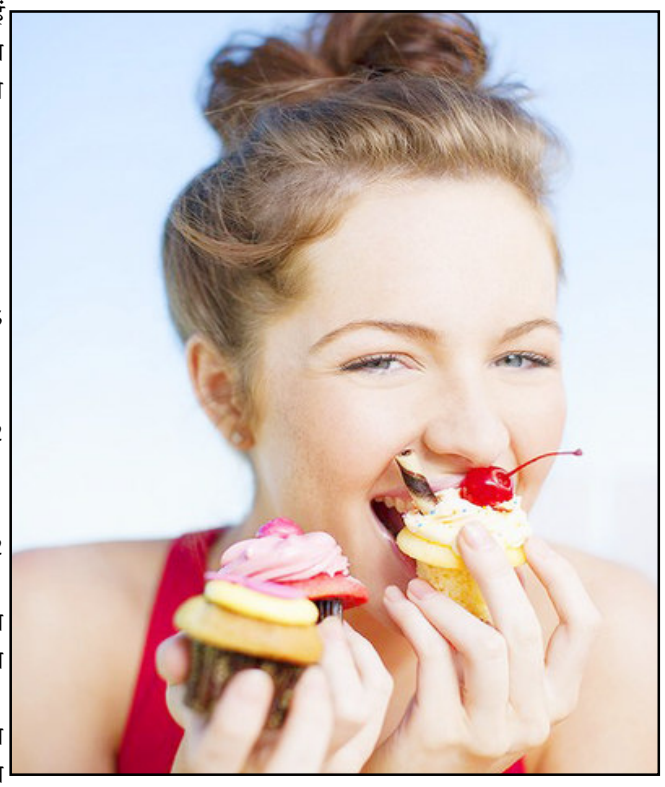

चॉकलेट पाई

सामग्री

बिस्कुट के टुकड़े- 1 कप

पिघलाया हुआ बटर- 5 चम्मच

भरावन के लिए

कटा हुआ चॉकलेट- 2 कप

दूध- 1/4 कप

चीनी का पाउडर- 2 चम्मच

फेंटा हुआ क्रीम- 2 कप

वैनिला एसेंस- 1 चम्मच

गार्निशिंग के लिए

फेंटा हुआ क्रीम- 2 कप

कद्दूकस किया हुआ चॉकलेट- 3 चम्मच

विधि

बिस्कुट और पिघलाए हुए बटर को एक बाउल में डालकर मिलाएं। मनपसंद आकार का एक बरतन लें और उसमें इस मिश्रण को डालकर उसे अच्छी तरह से चम्मच या स्टैपुला से दबाएं। अब इस बरतन को फ्रिज में कम-से-कम २० मिनट तक या बेस के कडम होने तक रखें। अब चॉकलेट और दूध को माइक्रोवेव सेफ बाउल में डालकर मिलाएं और माइक्रोवेव में ३० से ४० सेकेंड तक गर्म करें। अच्छी तरह से मिलाएं ताकि मिश्रण में कोई गांठ न बचे। अब क्रीम, चीनी पाउडर और वैनिला एसेंस को एक बरतन में डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। इस मिश्रण में चॉकलेट वाला मिश्रण डालें और फिर से मिलाएं।

अब इस मिश्रण को बिस्कुट बेस के ऊपर फैलाएं और दो से तीन घंटे के लिए फिर से फ्रिज में रखें। फ्रिज से निकालें। कद्दूकस किए हुए चॉकलेट से गार्निश करें। चॉकलेट पाई को मनचाहे टुकड़ों में काटें और सर्व करें।

सामग्री

चॉकलेट पाउडर- 8 चम्मच

दरदरा बादाम- 4 चम्मच

कटे हुए बादाम- २०

अंडे- 6

चीनी- 2 कप

मैदा- 6 चम्मच

पिघलाया हुआ बटर- 8 चम्मच

विधि

ओवन को 180 डिगरी सेल्सियस पर प्री हीट कर लें। अंडे को एक बाउल में फोड़ लें। उसमें चीनी डालें और हैंड ब्लेंडर की मदद से फेंटें। मैदा, चॉकलेट पाउडर और दरदरा बादाम को बाउल में डालें। हैंड ब्लेंडर की मदद से इस मिश्रण को अच्छी तरह से मिलाएं। पिघलाया हुआ बटर भी बाउल में डालें और मिलाएं।

अब इस मिश्रण को मफिन बनाने वाले सांचे में डालें। ध्यान रहे कि हर सांचे को आधा ही भरा हो। अब हर मफिन के ऊपर कटे हुए बादाम छिड़कें और पहले से गर्म ओवन में २० से 25 मिनट तक पकाएं और गर्मागर्म सर्व करें।

लौट रहे हैं अपनी जमीं की ओर

वो खान-पान जो हमारी दादी-नानी के जमाने में प्रचलित था, जो पिछले कुछ वर्षों में खो सा गया था, अब लौटने लगा है। हमें समझ में आ ही गया कि उस दौर की चीजें कितनी वैज्ञानिक हुआ करती थीं।

कुल्हड़ में चाय पियो और फेंक दो, ऐसे में न तो किसी और के जूठे में खाए से इंफेक्शन का खतरा, साथ ही गांव की कच्ची मिट्टी से चीज तैयार और दो हाथों को काम भी। लेकिन प्लास्टिक ने जैसे कुल्हड़ की विदाई की और हमारे सार्वजनिक स्थान इस फेंके हुए प्लास्टिक के कचरे से ऊपर तक भर गए, ऐसे में बहुत से लोग सोचते हैं कि शायद कुल्हड़ ही ठीक था।

घर के कामों में छिपा है स्वास्थ्य

पहले घर में महिलाएं चक्की से आटा-दाल, चावल, बेसन आदि पीसा करती थीं। यह एक बहुत मेहनत का काम था। सवेरे-सवेरे घरों में चक्की की घर्र-घर्र शुरू हो जाती थी। मगर कहते हैं कि चक्की पीसने के कारण न तो उनके कंधे जाम होते थे न ही उनको सर्वाइकल जैसी बीमारियां सताती थीं। जबकि आज बड़ी संख्या में महिलाएं इन बीमारियों से पीडित हैं। इसी तरह शादी आदि समारोहों में पत्तल, दोने, कुल्हड़ में खाने से किसी तरह के इंफेक्शन का खतरा नहीं रहता था। यही नहीं, कहते हैं कि चूल्हे पर पकी रोटी अधिक पौष्टिक होती थी। लेकिन इनका दूसरा पक्ष भी था। एक तो महिलाओं को रात-दिन खटना पड़ता था। दूसरे, चूल्हे पर एक दाल जितनी देर में पकती थी उतने समय में कुकर और गैस का इस्तेमाल करके अनेक चीजें बनाई जा सकती हैं। फिर वक्त भी बदला। पहले महिलाओं की जिम्मेदारी घर और रसोई तक ही सीमित थी मगर आज की कामकाजी स्त्री जिसके पास घर और दफ्तर की दोहरी जिम्मेदारी है, उसके पास इतना समय कहां कि वह पूरे दिन रसोई में खटती रहे। एक तरह से तकनीक ने इस कामकाजी स्त्री के जीवन को आसान बनाया, मगर इसके चलते बहुत से रोगों ने उन्हें आ घेरा। डाक्टरों और डाइटीशियंस की मानें तो महिलाओं ने जब से शारीरिक मेहनत कम की, रोगों ने उनका दामन थाम लिया।

रूप बदल कर आए घरेलू इस्तेमाल की चीजें

घरेलू कामों को इन दिनों फिटनेस मंत्र के रूप में भी देखा जाने लगा है। जिम जाने के मुकाबले यदि घरेलू कामों को समय दिया जाए तो आपकी कैलोरी भी बर्न होती है और घर भी आपके कंट्रोल में रहता है। लेकिन समस्या फिर वही है कि आखिर काम भी कितना और किस हद तक। कोई चीज तभी जिंदा रहती है जब वह बिके, उसकी उपयोगिता साबित हो सके। लोग छोटी चक्की भी खरीद रहे हैं, चाहे वह घर में एक शो पीस के रूप में ही दिखती है।

16 कर्मचाररियों की सेवा समाप्त होने पर गुस्सा

बागेश्वर(आरएनएस)। जिला अस्पताल में टीएनएम के माध्यम से लगे नौ स्टाफ नर्स, एक एक्स-रे कर्मी और एक लैब टेक्निशन सहित 16 कर्मचारियों का सेवा समाप्त हो गई है। इस पर उन्होंने कड़ी आपत्ति जताई है। नाराज कर्मचारियों ने दोबारा तैनाती देने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। सरकार पर उपेक्षा का आरोप भी लगाया है। हड़ताली कर्मचारी मंगलवार को जिला अस्पताल परिसर में एकत्रित हुए। यहां हुई सभा में वक्ताओं ने कहा कि उन्हें विभाग से जो भी जिम्मेदारी मिलती है उसे वह पूरे मनोयोग से करते हैं। इसके बावजूद उनकी सेवा समाप्ति का फरमान जारी किया है। उन्होंने कहा की उनको हटाने से उन पर आर्थिक संकट गहरा रहा है। उन्होंने कहा की एक्स-रे विभाग में एक ही कर्मचारी तैनात है, उसके हटने से मरीजों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने अपनी मांगों को लेकर जिला अस्पताल में नारेबाजी के साथ प्रदर्शन किया। जल्दी नियमित करने की मांग की। राजेश्वरी, केशव, मनीष महंत, देवकी, नीता टाकुली, गीता टाकुली, कृष्णा नाथ, दीपक गोस्वामी, वीर सिंह मौजूद रहे।

आचार संहिता लगने के बाद से अब तक 82.56 बल्क लीटर अवैध शराब बरामद

बागेश्वर(आरएनएस)। निकाय चुनाव की आदर्श आचार संहिता के चलते डीएम नवनीत पांडे के निर्देशानुसार जनपद में निर्वाचन के दौरान आबकारी विभाग की ओर से अवैध शराब के विरुद्ध प्रभावी प्रवर्तन अभियान चलाया जा रहा है। जिला आबकारी अधिकारी तपन पांडेय ने बताया कि अभियान के दौरान जिला मुख्यालय क्षेत्र के अंतर्गत भुवन सिंह निवासी-मल्ली खटौली के पास से 54 पव्वे एवं 18 बोतल अवैध देशी मदिरा (कुल 23.22 बल्क लीटर) बरामद होने पर गिरफ्तार किया गया है। जिसके खिलाफ आबकारी अधिनियम की धारा-60 तहत अभियोग पंजीकृत किया गया है। आबकारी अधिकारी ने बताया कि आचार संहिता प्रभावी होने से वर्तमान तक जनपद में अवैध मदिरा के विरूद्ध आबकारी विभाग सघन प्रर्वतन अभियान के दौरान 82.56 बल्क लीटर अवैध मदिरा विभाग की ओर से जब्त की गयी है। जिसका अनुमानित मूल्य लगभग 51693 रुपये है।

दरऊ चौक पर सड़क दुर्घटना में स्कूटी पर बैठी महिला की मौत

रुद्रपुर(आरएनएस)। दरऊ चौक पर ट्रक ने स्कूटी को टक्कर मार दी। इस घटना में स्कूटी पर अपने पति के साथ पीछे बैठी महिला की मौत हो गई। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। बीते सोमवार को वीरेंद्र पाल पुत्र ढाकन लाल निवासी बकैनिया काले खां बहेड़ी हाल निवासी उत्तरांचल कालोनी किच्छा पत्नी तारावती के साथ रिश्तेदारी में गांव पटेरी पुलभट्टा गए थे। रात लगभग 10 बजे वह अपनी पत्नी तारावती को स्कूटी पर बैठाकर वापस आ रहे थे। दरऊ चौक पर पीछे से आ रहे ट्रक ने उसकी स्कूटी को टक्कर मार दी। इस घटना में तारावती ट्रक के टायर के नीचे आकर गंभीर रूप से घायल हो गई और वीरेन्द्र पाल चोटिल हो गया। घटना के बाद दरऊ चौक पर जाम स्थिती बन गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। एंबुलेंस के माध्यम से तारवती को सीएचसी लाया गया। यहां चिकित्सकों ने तारावती को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

निकाय चुनाव के लिए 5888 कर्मचारियों को दिया प्रशिक्षण

देहरादून(आरएनएस)। नगर निकाय चुनाव को लेकर मंगलवार को चुनाव कार्मिकों का पहला प्रशिक्षण दिया गया। ऋषिपर्णा सभागार में आयोजित प्रशिक्षण में जिले की दो नगर निगम, चार नगर पालिका और एक नगर पंचायत के 1071 बूथों के रिजर्व कर्मचारियों समेत 5888 कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण में जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सविन बसंल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्वाचन के लिए नियुक्त कार्मिकों की सूचना संबंधित विभाग को तत्काल प्राप्त करवाई जाए, ताकि कार्मिकों का समय पर निर्वाचन ड्यूटी के लिए विभाग से कार्यमुक्त किया जा सके। पहले दिन नगर निगम के 845 बूथ के लिए 1135 मतदान दलों के 4540 कार्मिक, नगर निगम ऋषिकेश के 86 बूथ के 118 मतदान दलों के 472 कार्मिक, नगर पालिका परिषद डोईवाला के 59 बूथ के 89 मतदान दलों के 356 कार्मिक, नगर पालिका मसूरी के 30 बूथ के 48 मतदान दलों के 192 कार्मिक, नगर पालिका विकासनगर के 22 बूथ के 35 मतदान दलों के 140 कार्मिक, नगर पालिका परिषद हरबर्टपुर के 14 बूथ के 23 मतदान दलों के 92 और नगर पंचायत सेलाकुई के 15 बूथ के 24 मतदान दलों के 96 कार्मिक को प्रशिक्षण दिया गया। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी अभिनव शाह, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी रंजीत सिंह चौहान, जिला पर्यटन विकास अधिकारी सीमा नौटियाल आदि मौजूद रहे।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका के लिए दो जनवरी से आवेदन, भर्ती नियमावली में किया गया संशोधन

देहरादून। पिछली कैबिनेट में आंगनबाड़ी भर्ती नियमावली में संशोधन किया गया, जिससे इन पदों पर भर्ती का रास्ता साफ हुआ। इसके बाद विभाग ने भर्ती लिए 18 और 23 दिसंबर को शासनादेश जारी कर दिए थे। पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन दो जनवरी से शुरू होंगे। महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने बताया, प्रदेश के सभी जिलों में मिनी आंगनबाड़ी प्रदेश के विभिन्न जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका केंद्रों का उच्चीकरण किया गया था, जिसके बाद वहां नए पद बने थे। उन्होंने बताया कि इन पर नियुक्ति के लिए नियमावली में बदलाव करना जरूरी था। पिछली कैबिनेट में आंगनबाड़ी भर्ती नियमावली में संशोधन किया गया, जिससे इन पदों पर भर्ती का रास्ता साफ हुआ। इसके बाद विभाग ने भर्ती लिए 18 और 23 दिसंबर को शासनादेश जारी कर दिए थे। पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन मंगाए गए हैं। ऑनलाइन आवेदन दो जनवरी 2025 की सुबह 10 बजे से 31 जनवरी शाम पांच बजे तक किए जा सकते हैं। आवेदन मबक.ना.हवअ.पद और मबकना.पद पोर्टल पर किया जा सकता है।

महिलाओं को दी प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की जानकारी

रुद्रपुर(आरएनएस)। पंचायत भवन परिसर शांतिपुरी नंबर दो में मंगलवार को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग विभाग हल्द्वानी ने समूह की महिलाओं को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की जानकारी दी गई। विभागीय सहनिदेशक अमित मोहन ने कहा कि महिलाएं कम खर्चे पर छोटे-छोटे अच्छे रोजगार खड़े कर सकती हैं। जिसके लिए सरकार की तरफ से उन्हें 5 दिन का नि:शुल्क तकनीकी प्रशिक्षण एवं यात्रा भत्ता दिया जाता है। बताया कि योजना में रोजगार खड़े करने के लिए महिलाओं को एक लाख से 5 लाख तक का बैंक लोन 5 फीसदी ब्याज तथा 17 फीसदी सब्सिडी की सुविधा दी जाती है। विभागीय प्रबंधक अंकित शाह ने महिलाओं को अनेकों लघु उद्योगों के विकल्प बताएं। उत्तराखंड ग्रामीण बैंक की शाखा प्रबंधक ममता अधिकारी ने महिलाओं को वित्तीय सहायता एवं अपनी रोजगार की जानकारी साझा करने के लिए बैंक आने का न्योता दिया। समूह अध्यक्ष कविता तिवारी ने अधिकारियों के समक्ष महिला स्वरोजगार के संबंध में जनवरी के पहले पखवाड़े में सेमिनार कराने की मांग की। यहां रेना भट्ट, नीमा पाण्डे, पूजा कोरंगा, लक्षमी देवी, वीना पाण्डे, चंपा कोरंगा, गीता देवी, दीपा काण्डपाल, विनीता तिवारी, रेखा रौतेला, गीता रावत, प्रियांका रौतेला, ललिता रौतेला, हीरा देवी, मोनिका देवी रहीं। अध्यक्षता प्रधान चंद्रकला बिशन कोरंगा, संचालन कविता तिवारी ने किया।

राष्ट्रीय खेल शुभंकर का भव्य स्वागत

पिथौरागढ़(आरएनएस)। 38वें राष्ट्रीय खेल शुभंकर का हिमनगरी पहुंचने पर भव्य स्वागत हुआ। मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम के दौरान शुभंकर मौली के साथ लोगों ने सामूहिक फोटो ली। यहां भीम राम, हेम लोहनी, शिब्बू कुमार, कैलाश लस्पाल, प्रकाश बुर्फाल, सचिव जिला क्रिकेट एसोसिएशन उमेश जोशी, फुटबॉल कोच यतीश ओझा, विशाल नगरकोटी, बॉक्सिंग कोच महिमा विश्वकर्मा, आनंद जंगपांगी आदि मौजूद रहे।

स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

ऋषिकेश(आरएनएस)। निर्मल आश्रम परिवार ने मंगलवार को अपने दो संस्थानों निर्मल आश्रम अस्पताल और निर्मल आश्रम दीपमाला पब्लिक स्कूल का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया। स्थापना दिवस पर गुरुवाणी और शबद-कीर्तन से संगत निहाल हुई। मायाकुंड स्थित निर्मल आश्रम में गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ किया गया। साधु-संतों के लिए भंडारा, पाठों के भोग, गुरूवाणी शब्द कीर्तन का आयोजन भी हुआ। आश्रम प्रमुख महंत राम सिंह महाराज और संत जोध सिंह ने कहा कि आश्रम द्वारा निर्मल आश्रम अस्पताल का 34वां और निर्मल आश्रम दीपमाला पब्लिक स्कूल का 27वां स्थापना दिवस समागम मनाया जा रहा है। निर्मल आई इंस्टीट्यूट और निर्मल ज्ञानदान अकादमी द्वारा भी चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दे रहा है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।